महादेवी वर्मा के साहित्य में नारी चेतना

Dr. Moula
Krupa nidhi college of commerce and management, Sarjapur main road,
Koramangala, Bangalore 560034

सारांश

महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य की प्रमुख रचनाकार हैं, जिनके साहित्य में नारी-जीवन, आत्मसम्मान, स्वतंत्रता, सामाजिक समानता और मानवीय गरिमा से संबंधित प्रश्न व्यापक रूप से अभिव्यक्त हुए हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में उनके काव्य, निबंध, संस्मरण और रेखाचित्रों के आधार पर नारी चेतना के विविध रूपों का विश्लेषण किया गया है। उनके काव्य में नारी चेतना आत्मानुभूति, वेदना, स्वाभिमान, जागरण, संघर्ष और स्वतंत्र अस्तित्व की आकांक्षा के रूप में दिखाई देती है। निबंध-साहित्य, विशेषतः 'शृंखला की कड़ियाँ', में स्त्री की पराधीनता, शिक्षा, विवाह, आर्थिक निर्भरता, अधिकार और सामाजिक समानता जैसे प्रश्न स्पष्ट वैचारिक रूप में सामने आते हैं। 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' में विभिन्न स्त्री-पात्रों के माध्यम से वैधव्य, आर्थिक अभाव, सामाजिक उपेक्षा, रूढ़ियों, श्रम, आत्मसम्मान और प्रतिरोध का यथार्थ चित्रण मिलता है। वहीं 'पथ के साथी' में सुभद्रा कुमारी चौहान का व्यक्तित्व स्वतंत्र, सक्रिय और सृजनशील नारी चेतना का उदाहरण प्रस्तुत करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि महादेवी वर्मा की नारी चेतना केवल स्त्री-पीड़ा के चित्रण तक सीमित नहीं, बल्कि आत्मबोध, स्वावलंबन, समानता, अधिकार-बोध और स्वतंत्र मानवीय व्यक्तित्व की स्थापना से जुड़ी समग्र चेतना है।

बीज शब्द- नारी चेतना, आत्मसम्मान, स्वावलंबन, सामाजिक समानता, स्वतंत्र व्यक्तित्व।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में महादेवी वर्मा का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वे केवल छायावाद की प्रमुख कवयित्री ही नहीं, बल्कि गंभीर चिंतक, निबंधकार, संस्मरणकार और रेखाचित्रकार भी थीं। उनके साहित्य में संवेदना, करुणा, आत्मचेतना, मानवीय गरिमा और सामाजिक असमानता के प्रति गहरी सजगता दिखाई देती है। विशेष रूप से स्त्री-जीवन की समस्याओं, उसके आत्मसम्मान, स्वतंत्र व्यक्तित्व और सामाजिक स्थिति को उन्होंने जिस गंभीरता से समझा और अभिव्यक्त किया, वह हिंदी साहित्य में उनकी विशिष्ट पहचान बनाता है। उनके साहित्य में नारी केवल दुःख, त्याग और करुणा की प्रतीक नहीं है, बल्कि वह अपने अधिकारों, आत्मसम्मान और अस्तित्व के प्रति जागरूक एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में सामने आती है। नारी चेतना का अर्थ केवल स्त्री की पीड़ा अथवा सामाजिक शोषण का चित्रण नहीं है। इसके अंतर्गत स्त्री की अस्मिता, आत्मबोध, शिक्षा, आर्थिक स्वावलंबन, सामाजिक समानता, स्वतंत्र निर्णय-क्षमता, रूढ़ियों के प्रति प्रतिरोध तथा अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता जैसे अनेक पक्ष सम्मिलित होते हैं। महादेवी वर्मा के साहित्य में ये सभी पक्ष प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उपस्थित हैं। उनके निबंधों में स्त्री की सामाजिक पराधीनता, आर्थिक निर्भरता, विवाह-संस्था, शिक्षा और अधिकारों से जुड़े प्रश्न स्पष्ट रूप से उठाए गए हैं, जबकि संस्मरणों और रेखाचित्रों में

*Corresponding Author Email: -moulaa794@gmail.com
Published: 23 September 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i9.45929
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

समाज की वास्तविक स्त्रियों के जीवन-संघर्ष, उपेक्षा, श्रम, सहनशीलता और आत्मसम्मान का सजीव चित्र मिलता है। दूसरी ओर उनके काव्य में स्त्री की आंतरिक चेतना, वेदना, आत्मसंघर्ष, स्वतंत्रता की आकांक्षा और व्यक्तित्व की गरिमा अधिक संवेदनात्मक एवं प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त होती है।

महादेवी वर्मा की नारी-दृष्टि की विशेषता यह है कि वे स्त्री-मुक्ति को केवल पुरुष-विरोध या सामाजिक विद्रोह तक सीमित नहीं करतीं। उनके लिए वास्तविक स्वतंत्रता का अर्थ स्त्री को एक स्वतंत्र मनुष्य के रूप में स्वीकार करना है, जिसे शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक सम्मान और निर्णय का अधिकार प्राप्त हो। इसी कारण उनके साहित्य में नारी-चेतना भावनात्मक, वैचारिक और सामाजिक—तीनों स्तरों पर विकसित दिखाई देती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में महादेवी वर्मा के काव्य, निबंध, संस्मरण और रेखाचित्रों के आधार पर उनकी नारी-चेतना के विविध रूपों का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि उनके साहित्य में स्त्री की पीड़ा, संघर्ष, आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और सामाजिक यथार्थ किस प्रकार एक व्यापक मानवीय दृष्टि के साथ अभिव्यक्त होते हैं।

काव्य में निहित नारी चेतना

महादेवी वर्मा का काव्य-साहित्य नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा आदि संग्रहों में विकसित हुआ है। उनके काव्य में वेदना, विरह, करुणा और रहस्यात्मक अनुभूति के साथ-साथ आत्मबोध, स्वाभिमान, स्वतंत्रता, संघर्ष और मुक्ति की आकांक्षा भी निरंतर दिखाई देती है। इसलिए उनकी कविता को केवल दुःख और विरह तक सीमित करके देखना उचित नहीं है। नारी चेतना की दृष्टि से उनके काव्य का महत्त्व विशेष रूप से उस स्वतंत्र 'मैं' में है, जो अपनी अनुभूति, पीड़ा, निजता और अस्तित्व को स्वयं अभिव्यक्त करता है। उनके काव्य में नारी चेतना प्रत्यक्ष सामाजिक घोषणा की अपेक्षा आत्मानुभूति, प्रतीक, स्वाभिमान और बंधन-मुक्ति की आकांक्षा के रूप में अधिक व्यक्त हुई है।

इस संदर्भ में 'नीहार' की कविता 'अभिमान', 'सांध्यगीत' की 'मैं नीर भरी दुख की बदली', 'चिर सजग आँखें उनींदी' और 'प्रिय चिरन्तन है सजनि', 'नीरजा' की 'बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ', तथा 'दीपशिखा' की 'पंथ होने दो अपरिचित' विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। इन कविताओं में स्त्री के आत्मबोध और स्वाभिमान से लेकर स्वतंत्र मार्ग चुनने की क्षमता तक नारी चेतना के विविध रूप दिखाई देते हैं। इनमें से प्रत्येक कविता प्रत्यक्ष रूप से स्त्री-विमर्श से संबंधित नहीं है; बल्कि उनमें व्यक्त आत्मस्वर और स्वतंत्रता-बोध को नारी चेतना के संदर्भ में विश्लेषित करना उचित होगा। 'मैं नीर भरी दुख की बदली' में महादेवी का 'मैं' अपनी पीड़ा और अस्तित्व को स्वयं परिभाषित करता है। कविता का अंतिम भाग अपने लिए स्थायी स्थान न होने की अनुभूति को अत्यंत मार्मिक ढंग से सामने लाता है—

"विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली!"[1]

यह अनुभूति केवल विरह की नहीं, बल्कि अस्तित्व की अस्थिरता की भी है। नारी चेतना की दृष्टि से इसे उस स्त्री-अनुभव के साथ पढ़ा जा सकता है जिसमें स्त्री परिवार और समाज के भीतर उपस्थित होते हुए भी अपने स्वतंत्र स्थान और पहचान की खोज करती है।

'नीहार' की 'अभिमान' में पीड़ा आत्महीनता नहीं बनती, बल्कि आत्ममूल्य और आत्मगौरव से जुड़ती है। कविता में कवयित्री अपने दुःखपूर्ण जीवन को किसी दूसरे विराट अस्तित्व से कम नहीं मानती। यही आत्मसम्मान नारी चेतना का महत्त्वपूर्ण पक्ष है—

"मेरी लघुता पर आती
जिस दिव्य लोक को व्रीड़ा,
उसके प्राणों से पूछो
वे पाल सकेंगे पीड़ा?"[2]

यहाँ अपने 'लघु' अस्तित्व के प्रति हीनता नहीं, बल्कि उसकी विशिष्टता का बोध है। आलोचनात्मक अध्ययनों में भी महादेवी के काव्य में इस आत्माभिमान को विशेष महत्त्व दिया गया है। उनकी नारी अपने अनुभव, अपनी पीड़ा और अपने व्यक्तित्व के मूल्य के प्रति सचेत है। इस आत्मसम्मान का दूसरा रूप 'प्रिय चिरन्तन है सजनि' में दिखाई देता है। यहाँ प्रेम और समर्पण के बावजूद कवयित्री अपने 'निजत्व' को पूरी तरह समाप्त नहीं करना चाहती। प्रेम में विलय की आकांक्षा और स्वतंत्र पहचान की रक्षा—दोनों एक साथ उपस्थित हैं। इसलिए यह कविता नारी चेतना के उस सूक्ष्म पक्ष को सामने लाती है, जिसमें स्त्री प्रेम-संबंध के भीतर रहते हुए भी अपने व्यक्तित्व और आत्मसम्मान को बनाए रखना चाहती है। इसी प्रकार 'बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ' में 'मैं' एक ही समय में अनेक रूपों और विरोधी स्थितियों को धारण करता है। यह बहुआयामी आत्मस्वर स्त्री को एक सीमित और एकांगी छवि में बाँधने के विपरीत उसके जटिल तथा स्वतंत्र व्यक्तित्व को व्यक्त करता है।

'चिर सजग आँखें उनींदी', जिसे पाठ्य-संदर्भों में 'जाग तुझको दूर जाना' के रूप में भी प्रस्तुत किया जाता है, महादेवी के काव्य में जागरण और संघर्ष की चेतना का प्रमुख उदाहरण है। कविता में मोम के बंधन, रंगीन पंख, मधुर गुंजन और फूल जैसे आकर्षक प्रतीकों के माध्यम से उन बाधाओं का संकेत मिलता है जो दिखाई तो सुखद देती हैं, किंतु व्यक्ति की स्वतंत्र यात्रा को रोक सकती हैं। कविता स्वयं अपनी छाया को 'कारा' न बनाने और निरंतर आगे बढ़ने का संदेश देती है। नारी चेतना के संदर्भ में यह आत्मनिर्णय और सुविधाजनक बंधनों से मुक्ति की आकांक्षा का प्रतीक बनती है। इसी चेतना का अधिक दृढ़ और संघर्षशील रूप 'पंथ होने दो अपरिचित' में मिलता है। यहाँ अपरिचित मार्ग, अकेलापन और कठिनाई भय का कारण नहीं, बल्कि स्वतंत्र निर्णय और संकल्प के प्रतीक हैं—

"दुखव्रती निर्माण उन्मद,
यह अमरता नापते पद,
बाँध देंगे अंक-संसृति
से तिमिर में स्वर्ण बेला!"[3]

इन पंक्तियों में दुःख को केवल सहने की वस्तु नहीं माना गया, बल्कि उसे निर्माण और भविष्य की संभावना में बदल दिया गया है। कठिन और अपरिचित मार्ग पर आगे बढ़ने की यह चेतना उस परंपरागत 'अबला' स्त्री-छवि के विपरीत है, जिसमें स्त्री को आश्रित और संरक्षण-आकांक्षी माना जाता रहा है। यहाँ आत्मनिर्भरता और संघर्षशीलता नारी चेतना के सशक्त संकेत बनते हैं। महादेवी वर्मा के काव्य में नारी चेतना वेदना से आत्महीनता की ओर नहीं, बल्कि आत्मबोध की ओर बढ़ती है। उनके काव्य में नारी केवल वेदना की प्रतीक नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व के प्रति सजग, स्वाभिमानी और स्वतंत्रता की आकांक्षा रखने वाला व्यक्तित्व भी है।

निबंध साहित्य में नारी चेतना

महादेवी वर्मा का निबंध-साहित्य विचार, संवेदना और सामाजिक यथार्थ का सशक्त समन्वय है। उनके निबंधों में भाषा भावात्मक होते हुए भी तर्कपूर्ण है और स्त्री-जीवन के प्रश्नों को वे अनुभव, इतिहास और सामाजिक संरचना से जोड़कर देखती हैं। विशेष रूप से 'शृंखला की कड़ियाँ' में नारी की पराधीनता, अधिकार, शिक्षा, विवाह, आर्थिक निर्भरता और सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़े प्रश्नों का गंभीर विवेचन मिलता है। यही निबंध-साहित्य उनकी नारी चेतना का सबसे स्पष्ट

वैचारिक आधार बनता है। 'शृंखला की कड़ियाँ' में महादेवी भारतीय नारी की मानसिक और सामाजिक दासता को रेखांकित करते हुए उसे किसी पर प्रभुत्व स्थापित करने की आकांक्षा से अलग रखती हैं। उनके लिए स्त्री-मुक्ति का अर्थ पुरुष से प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि अपना उचित स्थान, स्वत्व और सामाजिक उपयोगिता प्राप्त करना है। वे यह भी मानती हैं कि स्त्री की जागृति केवल बाहरी सुधारों से नहीं, उसके भीतर स्वतंत्र व्यक्तित्व और अधिकार-बोध के विकास से संभव होगी। इसी विचार को वे स्पष्ट शब्दों में कहती हैं— "हमें न किसी पर जय चाहिए, न किसी से पराजय; न किसी पर प्रभुता चाहिए, न किसी का प्रभुत्व। केवल अपना वह स्थान, वे स्वत्व चाहिए जिनका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नहीं है, परन्तु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग बन नहीं सकेंगी।"[4] यह दृष्टि नारी को दया या संरक्षण की अपेक्षा रखने वाली सत्ता के रूप में नहीं, बल्कि अपने अधिकारों को पहचानने और सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने वाली स्वतंत्र इकाई के रूप में स्थापित करती है। यहाँ 'स्वत्व' का अर्थ केवल कानूनी अधिकार नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, निर्णय और सामाजिक सहभागिता से भी है।

'युद्ध और नारी' में स्त्री के जीवन पर युद्ध की हिंसा, असुरक्षा और सामाजिक विघटन के प्रभाव का विवेचन है। यहाँ महादेवी नारी को केवल युद्ध की पीड़िता नहीं मानतीं, बल्कि यह भी दिखाती हैं कि युद्ध पुरुष-केंद्रित शक्ति-व्यवस्था का परिणाम है और उसका सबसे गहरा प्रभाव परिवार तथा स्त्री-जीवन पर पड़ता है। 'नारीत्व का अभिशाप' में वे उन जैविक और सामाजिक धारणाओं पर प्रश्न उठाती हैं जिनके आधार पर स्त्री को दुर्बल, पराश्रित और सीमित माना गया। वे स्पष्ट करती हैं कि स्त्री की स्वाभाविक विशेषताओं को ही उसकी पराधीनता का कारण बना देना अन्यायपूर्ण है। आधुनिक नारी में वे आधुनिक शिक्षा, बाह्य स्वतंत्रता और जीवन-शैली के परिवर्तन का मूल्यांकन करती हैं तथा चेतावनी देती हैं कि केवल वेशभूषा या व्यवहार में आधुनिकता स्त्री की वास्तविक स्वतंत्रता नहीं है; आवश्यक है कि उसके भीतर विवेक, आत्मसम्मान और उत्तरदायित्व की चेतना भी विकसित हो।

'घर और बाहर' में महादेवी स्त्री के घरेलू क्षेत्र और सार्वजनिक जीवन के बीच बने कृत्रिम विभाजन की समीक्षा करती हैं। वे मानती हैं कि मातृत्व और परिवार स्त्री के जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं, किंतु इन्हीं के आधार पर उसकी प्रतिभा, शिक्षा और सामाजिक उपयोगिता को घर तक सीमित कर देना उचित नहीं। वे लिखती हैं— "युगों से नारी का कार्यक्षेत्र घर में ही सीमित रहा। उसके कर्तव्य के निर्धारित करने में उसकी स्वभावजात कोमलता, मातृत्व, सन्तान-पालन आदि पर तो ध्यान रखा ही गया, साथ ही बाहर के कठोर संघर्षमय वातावरण और परिस्थितियों ने भी समाज को ऐसा ही करने पर बाध्य किया।"[5] इस निबंध में स्त्री के घर से बाहर आने को परिवार-विरोध नहीं, बल्कि उसकी क्षमताओं के व्यापक सामाजिक उपयोग से जोड़ा गया है।

'हिन्दू स्त्री का पत्नीत्व' विवाह-संस्था के भीतर स्त्री की स्थिति का विश्लेषण करता है। महादेवी पत्नी के आदर्श को पूर्णतः अस्वीकार नहीं करतीं, पर उस स्थिति का विरोध करती हैं, जिसमें पत्नी का स्वतंत्र व्यक्तित्व पति की सत्ता में विलीन हो जाता है। विवाह उनके लिए सहयोग और समानता पर आधारित होना चाहिए, न कि एक पक्ष की आज्ञाकारिता पर। जीवन का व्यवसाय में मातृत्व, गृह-जीवन और स्त्री के सामाजिक दायित्वों की चर्चा करते हुए वे इस बात पर बल देती हैं कि स्त्री की जैविक भूमिका को उसके सम्पूर्ण जीवन का एकमात्र उद्देश्य नहीं माना जा सकता। मातृत्व महत्त्वपूर्ण है, पर उसके साथ उसकी बुद्धि, प्रतिभा और स्वतंत्र मानवीय व्यक्तित्व का विकास भी आवश्यक है।

स्त्री के अर्थ-स्वातंत्र्य का प्रश्न महादेवी की नारी चेतना का सबसे आधुनिक और व्यावहारिक पक्ष सामने लाता है। वे आर्थिक शक्ति और सामाजिक अधिकार के सीधे संबंध को पहचानती हैं। उनका विचार है कि जब धन और जीविका के साधनों पर अधिकार किसी एक वर्ग या लिंग के हाथ में रहता है, तब समानता केवल आदर्श बनकर रह जाती है। वे लिखती हैं— "अर्थ सदा से शक्ति का अन्ध-अनुगामी रहा है। जो अधिक सबल था उसने सुख के साधनों का प्रथम

अधिकारी अपने आपको माना और अपनी इच्छा और सुविधा के अनुसार ही धन का विभाजन करना कर्तव्य समझा।"[6] इसी कारण यह निबंध केवल आर्थिक प्रश्न तक सीमित नहीं रहता; वह स्पष्ट करता है कि आर्थिक पराधीनता स्त्री के वैवाहिक, पारिवारिक और सामाजिक निर्णयों को भी सीमित करती है। जीविका पर अधिकार मिलने से ही उसके व्यक्तित्व और चयन की स्वतंत्रता वास्तविक रूप ग्रहण कर सकती है। आर्थिक स्वतंत्रता को वे केवल आय अर्जित करने का साधन नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, निर्णय-क्षमता और सामाजिक समानता का आधार मानती हैं। 'हमारी समस्याएँ' में महादेवी स्त्री-समस्या को अलग-थलग प्रश्न के रूप में नहीं, बल्कि समाज की व्यापक संरचना से जोड़ती हैं। वे मानती हैं कि शिक्षा, कानून या बाहरी सुधार तभी प्रभावी होंगे जब सामाजिक दृष्टि, पारिवारिक संबंध और स्त्री-पुरुष के बीच शक्ति-संतुलन भी बदले। इस प्रकार उनके निबंधों में नारी चेतना अधिकार की माँग से आगे बढ़कर आत्मबोध, सामाजिक उत्तरदायित्व, आर्थिक स्वावलंबन, वैवाहिक समानता, शिक्षा और स्वतंत्र व्यक्तित्व की समग्र चेतना बन जाती है। उनका निबंध-साहित्य हिंदी में स्त्री-विमर्श की एक महत्त्वपूर्ण और दूरदर्शी आधारभूमि प्रस्तुत करता है।

संस्मरण और रेखाचित्रों में नारी जीवन का यथार्थ

महादेवी वर्मा के संस्मरण और रेखाचित्र हिंदी गद्य में जीवन के प्रत्यक्ष यथार्थ, करुणा और मानवीय संवेदना के विशिष्ट उदाहरण हैं। 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ' और 'पथ के साथी' में उन्होंने अपने संपर्क में आए व्यक्तियों को केवल स्मृति के पात्र के रूप में नहीं, बल्कि उनके सामाजिक परिवेश और जीवन-संघर्ष के साथ प्रस्तुत किया है। विशेष रूप से स्त्री-पात्रों के माध्यम से बाल-विवाह, वैधव्य, आर्थिक पराधीनता, पारिवारिक उपेक्षा, सामाजिक रूढ़ि, वर्गगत शोषण और स्त्री के आत्मसम्मान जैसे प्रश्न जीवंत रूप में सामने आते हैं। इसीलिए उनके रेखाचित्रों में नारी चेतना वैचारिक घोषणा से अधिक वास्तविक स्त्री-जीवन के अनुभवों के माध्यम से व्यक्त होती है।

'अतीत के चलचित्र' में भाभी, बिन्दा, सबिया, बिट्टो, बालिका माँ, अभागी स्त्री और लछमा जैसे पात्र स्त्री-जीवन की अलग-अलग परिस्थितियों को सामने लाते हैं। भाभी के माध्यम से वैधव्य और स्त्री पर लगाए गए सामाजिक प्रतिबंधों की करुण स्थिति उभरती है। बिन्दा बालिका के जीवन में मातृस्नेह के अभाव और सौतेली माँ की कठोरता का प्रतिनिधित्व करती है; उसका जीवन बताता है कि स्त्री-उत्पीड़न की शुरुआत कई बार बाल्यावस्था से ही हो जाती है। सबिया निम्नवर्गीय श्रमशील स्त्री है, जिसमें दांपत्य के प्रति निष्ठा और अत्यधिक सहनशीलता दिखाई देती है; किंतु यही सहनशीलता उस सामाजिक संस्कार को भी सामने लाती है, जिसमें स्त्री कष्ट को अपनी नियति मानती रहती है। बिट्टो के जीवन में विवाह और स्त्री की सामाजिक असुरक्षा का प्रश्न उभरता है, जबकि लछमा कठिन जीवन-स्थितियों के बीच आत्मीयता, श्रम और जिजीविषा का परिचय देती है।

इनमें बालिका माँ अत्यंत मार्मिक रचना है। बाल्यावस्था में विधवा हुई किशोरी मातृत्व की ऐसी स्थिति में पहुँचती है जिसे समाज स्वीकार करने के बजाय अपराध की तरह देखता है। महादेवी यहाँ स्त्री की भूल से अधिक उस सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न करती हैं जो पुरुष की जिम्मेदारी को गौण और स्त्री को ही कलंक का केंद्र बना देती है। इसी संदर्भ में उनका कथन है—"युगों से पुरुष स्त्री को उसकी शक्ति के लिए नहीं, सहनशक्ति के लिए ही दण्ड देता आ रहा है।"[7] इस एक वाक्य में स्त्री-जीवन की विडंबना स्पष्ट हो जाती है, समाज स्त्री की सहनशीलता की प्रशंसा करता है, किंतु उसकी सक्रिय शक्ति और स्वतंत्र निर्णय से भयभीत होता है।

'अभागी स्त्री' में नारी चेतना आर्थिक स्वाभिमान और आत्मसम्मान से जुड़ती है। नायिका का पति रोगग्रस्त है, आर्थिक साधन समाप्त हो चुके हैं और पारिवारिक सहयोग भी उपलब्ध नहीं है। फिर भी वह दया या दान पर जीवन नहीं बिताना चाहती, बल्कि श्रम के माध्यम से जीविका प्राप्त करना चाहती है। महादेवी लिखती हैं—"अपने पति की प्रतिष्ठा के

लिए और अपने आत्मसम्मान के लिए भी वह दान नहीं स्वीकार करेगी।"[8] उसमें श्रम, आत्मसम्मान और अपने पैरों पर खड़े होने की इच्छा है। पति की मृत्यु के बाद भी जिस घर पर उसका अधिकार होना चाहिए, उसी घर से उसे निकाल दिया जाना पितृसत्तात्मक संपत्ति और पारिवारिक अधिकार की असमानता को उजागर करता है।

'स्मृति की रेखाएँ' में यह सामाजिक यथार्थ और अधिक स्पष्ट रूप ग्रहण करता है। भक्तिन, बिबिया और गुँगिया विशेष रूप से निम्नवर्गीय स्त्रियों के संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं। भक्तिन का बाल-विवाह, पुत्रियों को जन्म देने के कारण परिवार में उपेक्षा, कम आयु में वैधव्य और अपनी बेटियों के अधिकार के लिए संघर्ष स्त्री के सामाजिक और आर्थिक असुरक्षा-बोध को सामने लाते हैं। उसके जीवन में दुःख के साथ आत्मसम्मान भी उतना ही प्रबल है—"दुख से शिथिल और अपमान से जलती हुई वह उस घर में बिना पानी पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी।"[9] यह प्रसंग भक्तिन को निष्क्रिय पीड़िता नहीं, बल्कि अपमान का प्रतिरोध करने वाली स्वाभिमानी स्त्री के रूप में स्थापित करता है।

बिबिया का चरित्र इस प्रतिरोध को और तीखा रूप देता है। उसकी स्पष्टवादिता और निर्भीकता सामाजिक व्यवस्था को स्वीकार्य नहीं होती; अतः उस पर चरित्र-संबंधी आरोप लगाए जाते हैं। महादेवी उसे 'विद्रोह की कभी राख न होनेवाली ज्वाला' कहती हैं। दूसरी ओर गुँगिया का जीवन स्त्री के दोहरे अभिशाप को सामने लाता है। वह निम्नवर्गीय स्त्री होने के साथ वाणी से भी वंचित है। अपनी निर्दोषता, पीड़ा और इच्छा को व्यक्त न कर पाना उसके सामाजिक शोषण को और गहरा बना देता है। इस प्रकार 'स्मृति की रेखाएँ' में स्त्री की आर्थिक निर्भरता, विवाह, वैधव्य, सामाजिक पूर्वग्रह और अभिव्यक्ति के अधिकार का प्रश्न एक साथ उपस्थित होता है।

'पथ के साथी' में सुभद्रा कुमारी चौहान का संस्मरण नारी चेतना का एक अलग पक्ष प्रस्तुत करता है। यहाँ महादेवी किसी शोषित निम्नवर्गीय स्त्री के बजाय ऐसी शिक्षित, रचनाशील, राजनीतिक रूप से सक्रिय और स्वतंत्र स्त्री का चित्र प्रस्तुत करती हैं, जो गृहिणी, माँ, साहित्यकार और स्वतंत्रता सेनानी सभी भूमिकाओं में अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाए रखती है। सुभद्रा के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हुए महादेवी लिखती हैं—"वे राजनीतिक जीवन में ही विद्रोहिणी नहीं रहीं, अपने पारिवारिक जीवन में भी उन्होंने अपने विद्रोह को सफलतापूर्वक उतार कर उसे सृजन का रूप दिया था।"[10] विवाह, जाति और कन्यादान जैसी रूढ़ियों के प्रति उनका प्रतिरोध यह सिद्ध करता है कि महादेवी की नारी-दृष्टि केवल पीड़ित स्त्री तक सीमित नहीं है; वह ऐसी स्त्री को भी प्रतिष्ठित करती है जो स्वयं सामाजिक परिवर्तन की सक्रिय शक्ति बनती है।

महादेवी वर्मा के संस्मरण और रेखाचित्रों में नारी जीवन अनेक स्तरों पर सामने आता है। भाभी और बालिका माँ में वैधव्य तथा सामाजिक रूढ़ि, बिन्दा में बालिका की उपेक्षा, सबिया में निम्नवर्गीय स्त्री की सहनशीलता, अभागी स्त्री में आर्थिक स्वाभिमान, लछमा में संघर्षशील जीवन, भक्तिन में आत्मसम्मान, बिबिया में विद्रोह, गुँगिया में अभिव्यक्ति-विहीन स्त्री की त्रासदी और सुभद्रा कुमारी चौहान में स्वतंत्र एवं सृजनशील स्त्री-व्यक्तित्व दिखाई देता है। इन रचनाओं में नारी चेतना किसी सिद्धांत के रूप में नहीं, बल्कि स्त्री के वास्तविक जीवन, उसकी पीड़ा, संघर्ष, स्वाभिमान और प्रतिरोध के जीवंत अनुभव के रूप में विकसित होती है।

महादेवी वर्मा की नारी चेतना की विशिष्टता

महादेवी वर्मा की नारी चेतना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह किसी एक साहित्यिक विधा, एक भाव या एक सामाजिक समस्या तक सीमित नहीं रहती। उनके काव्य में यह चेतना आत्मानुभूति, वेदना, स्वाभिमान, जागरण और स्वतंत्रता की आकांक्षा के रूप में सामने आती है; निबंधों में वही चेतना स्त्री के अधिकार, शिक्षा, विवाह, आर्थिक स्वावलंबन और सामाजिक समानता के प्रश्नों को प्रत्यक्ष रूप से उठाती है; जबकि संस्मरणों और रेखाचित्रों में यही दृष्टि वास्तविक स्त्री-जीवन के संघर्ष, उत्पीड़न, श्रम, वैधव्य और आत्मसम्मान के रूप में मूर्त हो जाती है। इस प्रकार महादेवी

की नारी चेतना भावना, विचार और सामाजिक यथार्थ—तीनों स्तरों पर विकसित होती है। मैनेजर पांडेय ने महादेवी के काव्य में उपस्थित अंधकार और आलोक के संघर्ष को भारतीय स्त्री की पराधीनता और स्वाधीनता की आकांक्षा से जोड़कर देखा है। उन्होंने लिखा है- "महादेवी को अंधकार से अधिक प्रकाश प्रिय है और पलायन से अधिक संघर्ष।"[11] उनकी कविता में अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की चेतना स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व की आकांक्षा का प्रतीक बनती है। यह दृष्टि महादेवी के काव्य को केवल करुणा और रहस्यवाद के दायरे से बाहर लाती है। 'जाग तुझको दूर जाना' और 'पंथ होने दो अपरिचित' जैसी कविताओं में दिखाई देने वाला संघर्षशील स्वर इसी व्यापक मुक्ति-चेतना से जुड़ता है।

राजेंद्र यादव महादेवी के साहित्य की विशिष्टता को उनके काव्य और गद्य के अंतर्संबंध में देखते हैं। 'आदमी की निगाह में औरत' के 'गिरिजाघर में मौत : महादेवी वर्मा' अध्याय में वे 'शृंखला की कड़ियाँ' के यथार्थवादी सामाजिक विश्लेषण और महादेवी की भावप्रधान कविताओं के बीच दिखाई देने वाले अंतर को मूल विरोध नहीं मानते। उनके अनुसार "एक तरफ इतना यथार्थवादी विश्लेषण और दूसरी तरफ ऐसी रूमानी कविताएं... आलोचक इस अंतर्विरोध में कोई संगति ही नहीं बैठा पाते। वस्तुत: यह एक ही चेतना है जो संवेदन और भावना के स्तर पर नीरजा, नीहार, रश्मि, सांध्यगीत, दीपशिखा, यामा के गीतों में व्यक्त होती है तो अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएं, मेरा परिवार, पथ के साथी या श्रृंखला की कड़ियाँ में अपने आसपास को खुली आंखों समेटती हैं।"[12] यह विचार पूरे शोध-पत्र की केंद्रीय स्थापना को पुष्ट करता है कि महादेवी के काव्य और गद्य को अलग-अलग न पढ़कर एक समग्र नारी-दृष्टि के रूप में समझना चाहिए।

कृष्णदत्त पालीवाल भी महादेवी के रचना-संसार को समग्रता में पढ़ने पर बल देते हैं। उनका स्पष्ट मत है कि "गद्य और पद्य की रचनाओं को मिला कर उनके रचनाकर्म का समग्रता में 'भाष्य' किया जाना चाहिए।"[13] रोहिणी अग्रवाल महादेवी वर्मा की नारी-दृष्टि में उपस्थित एक महत्त्वपूर्ण अंतर्विरोध की ओर संकेत करती हैं। उनके अनुसार, "महादेवी वर्मा ऐसी आधुनिका स्त्री से बेहद खौफजदा हैं। अपनी दृष्टिगत उदारता को अनेक सूक्तियों-सुभाषितों में शब्दबद्ध करने के बावजूद वे सामाजिक जीवन में क्रियाशील स्त्री की आत्मनिर्भरता, संकल्प-दृढ़ता और निर्णय क्षमता से भीत हैं। वे स्त्री के आर्थिक स्वावलंबन और विशिष्ट व्यक्तित्व का समर्थन करती हैं।"[14] यह कथन महादेवी की नारी-चेतना की जटिलता को सामने लाता है। 'स्त्री के अर्थ-स्वातंत्र्य का प्रश्न' में वे आर्थिक स्वावलंबन को स्त्री के आत्मसम्मान और स्वतंत्र निर्णय का आधार मानती हैं, जबकि 'घर और बाहर' तथा 'आधुनिक नारी' जैसे निबंधों में आधुनिक स्त्री की स्वतंत्रता के साथ विवेक, उत्तरदायित्व और सामाजिक संतुलन पर भी बल देती हैं। इस प्रकार महादेवी की नारी-दृष्टि केवल निर्बंध स्वतंत्रता की समर्थक नहीं है, बल्कि आर्थिक स्वावलंबन, विशिष्ट व्यक्तित्व, आत्मसम्मान और उत्तरदायित्व के संतुलित विकास पर आधारित दिखाई देती है।

महादेवी वर्मा की नारी चेतना की विशिष्टता उसकी समग्रता में है। उनके यहाँ नारी अपने अनुभव की व्याख्याता, अपने स्वत्व की माँग करने वाली, आर्थिक स्वतंत्रता चाहने वाली, सामाजिक रूढ़ियों का प्रतिरोध करने वाली और कठिन परिस्थितियों में भी आत्मसम्मान बनाए रखने वाली चेतनशील सत्ता है। काव्य में उसका अंतर्मन बोलता है, निबंधों में उसके प्रश्न वैचारिक रूप ग्रहण करते हैं और संस्मरण-रेखाचित्रों में वही प्रश्न वास्तविक जीवन के संघर्ष के रूप में दिखाई देते हैं। यही बहुआयामी स्वर महादेवी की नारी चेतना को हिंदी साहित्य में विशिष्ट और स्थायी महत्त्व प्रदान करता है।

निष्कर्ष

महादेवी वर्मा के साहित्य में नारी चेतना किसी एक विधा, एक कृति अथवा एक सामाजिक समस्या तक सीमित नहीं है। उनके काव्य, निबंध, संस्मरण और रेखाचित्रों का समग्र अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि स्त्री उनके साहित्य में केवल

करुणा, त्याग और पीड़ा की प्रतीक नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व, आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और अधिकारों के प्रति सजग व्यक्तित्व के रूप में उपस्थित होती है। उनके काव्य में यह चेतना आत्मानुभूति, स्वाभिमान, जागरण, संघर्ष और स्वतंत्र मार्ग की आकांक्षा के रूप में व्यक्त होती है, जबकि निबंध साहित्य में यही चेतना अधिक प्रत्यक्ष सामाजिक और वैचारिक रूप ग्रहण करती है। 'शृंखला की कड़ियाँ' में महादेवी ने स्त्री की पराधीनता, विवाह-संस्था, आर्थिक निर्भरता, शिक्षा, सामाजिक समानता और स्वतंत्र स्वत्व जैसे प्रश्नों को गंभीरता से उठाया है। यहाँ नारी-मुक्ति का अर्थ पुरुष पर प्रभुत्व स्थापित करना नहीं, बल्कि स्त्री को उसके उचित अधिकार और स्वतंत्र मानवीय अस्तित्व की स्वीकृति प्रदान करना है। दूसरी ओर 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' में यही समस्याएँ वास्तविक स्त्री-पात्रों के जीवन, संघर्ष, वैधव्य, आर्थिक अभाव, सामाजिक उपेक्षा और आत्मसम्मान के माध्यम से सामने आती हैं। 'पथ के साथी' में सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे सक्रिय और स्वतंत्र स्त्री-व्यक्तित्व का चित्रण नारी चेतना के सकारात्मक और सृजनशील रूप को सामने लाता है। अतः महादेवी वर्मा की नारी चेतना का स्वर केवल प्रतिरोध तक सीमित नहीं है; उसमें आत्मबोध, स्वावलंबन, सामाजिक न्याय, मानवीय गरिमा और स्वतंत्र व्यक्तित्व की स्थापना भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण है। उनके काव्य में नारी का अंतर्मन बोलता है, निबंधों में उसके सामाजिक प्रश्न वैचारिक रूप ग्रहण करते हैं और संस्मरणों तथा रेखाचित्रों में वही प्रश्न जीवन के यथार्थ के रूप में उपस्थित होते हैं। इसी समग्रता के कारण महादेवी वर्मा का साहित्य हिंदी साहित्य में नारी चेतना की एक महत्त्वपूर्ण, व्यापक और स्थायी अभिव्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित होता है।

संदर्भ सूची

1. वर्मा, महादेवी, सांध्यगीत, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 2017, पृ. 45
2. वर्मा, महादेवी, नीहार, इलाहाबाद, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, 1962, पृ. 25
3. वर्मा, महादेवी, दीपशिखा, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 2013, पृ. 45
4. वर्मा, महादेवी, शृंखला की कड़ियाँ, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 2017, पृ. 21
5. वही, पृ. 60
6. वही, पृ. 124
7. वर्मा, महादेवी, अतीत के चल-चित्र, इलाहाबाद, भारती-भण्डार, लीडर प्रेस, संवत् 2007, पृ. 65
8. वही, पृ. 88
9. वर्मा, महादेवी, स्मृति की रेखाएँ, इलाहाबाद, भारती भण्डार, 2008, पृ. 5
10. वर्मा, महादेवी, पथ के साथी, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 2007, पृ. 46
11. पांडेय, मैनेजर, अनभै साँचा, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, पृ. 232
12. यादव, राजेंद्र, आदमी की निगाह में औरत, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2007, पृ. 119
13. पालीवाल, कृष्णदत्त, नवजागरण और महादेवी वर्मा का रचना-कर्म : स्त्री-विमर्श के स्वर, नई दिल्ली, किताबघर प्रकाशन, 2010, पृ. 14
14. अग्रवाल, रोहिणी, स्त्री लेखन : स्वप्न और संकल्प, राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृ. 139